Run by:*Maa Rewati Educational and Welfare Society*

MAA REWATI COLLEGE OF EDUCATION

(Recognised by:N.C.T.E. & Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur)
Jantipur Road, Badi Khairi, Mandla (M.P.)-481661
Phone: 0764-2291912,Website: www.mrcedu.com
Email: mrcedu1@gmail.com

Action Plan indicating the way students are familiarized with the diversities in India school systems

As per the curriculum of **"Maa Rewati College of Education, Mandla"** we distribute 2 question in all courses to all semesters students for a time period as per their syllabus and subject. Students submit their assignment as per given time duration to their subject teacher.

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

B.Ed. Assignment Submission Record

प्र. 1 थार्नडाइक के अधिगम सिद्धांत का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर - एडवर्ड थार्नडाइक USA के मनोवैज्ञानिक थे। जिन्होंने लगभग अपना पूरा जीवन कैलिफोर्निया विश्व विद्यालय के शिक्षक महाविद्यालय में बिताया। 'पशु व्यवहार' एवं 'सीखने की प्रक्रिया' पर इनके कार्यों के आधार पर आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान की नींव पड़ी।

अधिगम का सिद्धान्त - अधिगम का सिद्धान्त अलग-अलग मान्यताओं के अनुसार मनोवैज्ञानिकों के अनुरूप विभिन्न के सिद्धान्त, बाल-मनोविज्ञान के अन्तर्गत बालक के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जिसमें बालक में होने वाले व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जिसमें बालक मे होने वाले व्यवहार में परिवर्तन को अधिगम कहा जाता है।

अधिगम के सिद्धान्त को प्रमुख रूप से व्यवहारवादी सिद्धान्त, व्यवहारवादी साहचर्य सिद्धान्त और संज्ञानवादी सिद्धान्त के अन्तर्गत विभाजित किया गया है।

अधिगम के सिद्धान्त -

1. प्रयास व भूल का सिद्धान्त
2. अंतर्दृष्टि / सूझ का सिद्धान्त

3. पुरातन अनुबंधन का सिद्धान्त
4. हल का पुनर्बलन सिद्धान्त
5. सक्रिय अनुबंधन का सिद्धान्त
6.

थार्नडाइक का अधिगम का सिद्धान्त — प्रयास व भूल का सिद्धान्त है।

प्रयास व भूल का सिद्धान्त

सर्वप्रथम प्रयास व भूल का सिद्धान्त के प्रतिपादक अमेरिकी वैज्ञानिक E.L. Thorndike को माना जाता है। थार्नडाइक ने अपनी "बुक ऑफ साइकोलॉजी" पर प्रथम एवं भूल का सिद्धांत का उल्लेख किया जिसे उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धांत कहा जाता है। प्रयास एवं भूल के सिद्धान्त को ही उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धान्त माना गया।

थार्नडाइक ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन एक भूखी बिल्ली पर किया। इस बिल्ली को पिंजरे पर बन्द करके एक प्रयोग किया जिसके अन्तर्गत इन्होंने पिंजरे में एक लीवर तैयार किया जिसे बिल्ली द्वारा दबाने पर उसे भोजन प्राप्त हो जाता था।

बिल्ली द्वारा इस अनुक्रिया को बार-बार दोहराने पर। हर। भोजन उसके लिए उद्दीपक था। उद्दीपक के कारण उसमें प्रतिक्रिया आरंभ हुई। उसने अनेक प्रकार से बाहर निकलने का प्रयास किया। एक बार संयोग से उसका पंजा खटके पर पड़ा

फलस्वरूप वह दब गया और दरवाजा खुल गया। थार्नडाइक ने इस प्रयोग को बार-बार दोहराया। अन्त में एक समय ऐसा आ गया जब बिल्ली किसी भी प्रकार की भूल न करके खटके को दबाकर पिंजरे का दरवाजा खोलने लगी। इस प्रकार उद्दीपक और प्रतिक्रिया में संबंध स्थापित हो गया। थार्नडाइक के संबंधवाद के सिद्धान्त ने प्रयास तथा त्रुटि को विशेष महत्व दिया है।

प्रयास एवं त्रुटि के संबंध की व्याख्या करते हुए यह कहा गया है कि जब हम किसी काम को करने में त्रुटि या भूल करते हैं और बार-बार प्रयास करके त्रुटियों की संख्या कम या समाप्त करते, तो यह स्थिति प्रयास एवं त्रुटि द्वारा सीखना कहलाती है। वुडवर्थ ने लिखा है - प्रयास एवं त्रुटि में किसी कार्य को करने के लिए अनेक प्रयत्न करने पड़ते हैं जिनमें अधिकांश गलत होते हैं।

थार्नडाइक का प्रयोग। प्रयास तथा त्रुटि के सिद्धान्त का प्रवर्तक थार्नडाइक ने एक भूखी बिल्ली को पिंजरे में बन्द करके यह प्रयोग किया। भूखी बिल्ली पिंजरे के बाहर रखा मछली का टुकड़ा प्राप्त करने हेतु पिंजरे से बाहर आने के अनेक त्रुटि पूर्ण प्रयास करती रही। अंतत: वह पिंजरा खोलना सीख गयी। बिल्ली के समान बालक भी चलना, जूते पहनना, चम्मच से खाना खाने की अनेक क्रियाएँ सीखते हैं। वयस्क लोग भी ड्राइविंग, टेनिस, क्रिकेट आदि खेलना, टाई की गांठ बांधना इसी सिद्धान्त के अनुसार सीखते हैं। अतः थार्नडाइक ने लिखा - सीखना, संबंध स्थापित करना है। संबंध स्थापित करने का कार्य मनुष्य का मस्तिष्क करता है।

अधिगम

मनो वैज्ञानिकों ने सीखने को मानसिक प्रक्रिया माना है। यह प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है। सीखना एक व्यापक शब्द है यह अधिगम / सीखना निरन्तर चलने वाली सार्व-भौमिक प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से सीखना प्रारंभ कर देता है तथा मृत्यु पर्यन्त कुछ न कुछ सीखता रहता है। परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार घटते – बढ़ते है। सीखने के लिए कोई स्थान विशेष निश्चित नहीं रहता है। व्यक्ति कहीं भी, किसी भी समय किसी भी से कुछ भी सीख सकता है। जो भी व्यक्ति व्यवहार करता है तथा उसका अधिकांश भाग सीखने से अथवा सीखने की प्रक्रिया से प्रभावित रहता है। अधिगम या सीखना पूर्व अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है। अधिगम ही शिक्षा है इसलिए "विलियम वुडवर्थ" ने कहा – सीखना विकास की प्रक्रिया है।

अधिगम का अर्थ –

सीखना व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है, परन्तु सभी तरह के व्यवहार में परिवर्तन को सीखना नहीं कहा जाता है।

∴ सीखना एक मनो-वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो जीवन भर चलती रहती है। जिसमें बालक परिपक्वता की ओर बढ़ता हुआ एवं अनुभवों एवं प्रशिक्षणों से लाभ उठाता हुआ अपने स्वाभाविक व्यवहार या अनुभूति में गतिशील एवं परिवर्तन और परिमार्जन करता है। उसी को अधिगम या सीखना कहते है।

अधिगम की परिभाषा -

1. वुडवर्थ - "सीखना विकास की प्रक्रिया है"।

2. स्किनर - "सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है।"

3. क्रो तथा क्रो - "सीखना, आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।"

4. गेट्स एवं अन्य - "अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाना ही अधिगम एवं सीखना है।"

5. वुडवर्थ - "नवीन ज्ञान एवं नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया सीखने की प्रक्रिया है।

6. क्रॉना बैंडर - "अधिगम अनुभव के परिणाम स्वरूप व्यवहार में परिवर्तन द्वारा व्यक्त होता है।"

7. गिलफर्ड - "अधिगम अनुभव, पूर्व निर्मित व्यवहार के कारण व्यवहार में आये परिवर्तन ही अधिगम है।"

8. थार्नडाइक - "अधिगम (नियमित) समुचित प्रक्रिया का चयन करता तथा उसे उद्दीपक से जोड़ता है।"

अधिगम की प्रकृति –

1. अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है।
2. यह व्यक्ति की क्रिया शीलता पर निर्भर करता है।
3. अधिगम विकास की प्रक्रिया है जहाँ व्यक्ति को स्वा प्रयास करना पड़ता है।
4. अधिगम व्यक्ति के वातावरण के अनुरूप व्यक्ति में परिवर्तन लाता है। ये परि-वर्तन शील प्रक्रिया है।
5. स्थायी या अस्थायी लाता है।
6. अधिगम चेतना का परिणाम भी हो सकता है या जैविक व सामाजिक प्रक्रिया है।
7. समंजस्य के लिए हो सकता है। अधिगम सकारात्मक व नकारात्मक दोनों हो सकता है।
8. अधिगम व्यवहार की परिवर्तन की मानवीय क्रिया है।
9. अधिगम प्रक्रिया उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है।
10. अधिगम वर्तमान व्यवहार में परिवर्तन या नए व्यवहार पर प्रति बंध भी लगाता है।
11. अधिगम व्यक्ति को आवश्यक समायोजन और महाता के लिए तैयार करता है।
12. अधिगम का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है जिसमें मानव व्यवहार के सभी क्षेत्र जैसे – संज्ञानात्मक, संगुणात्मक भावात्मक तथा अनुभवात्मक सम्मिलित होते हैं।

13. अधिगम सार्वभौमिक एवं निरन्तर प्रक्रिया है। यह जीवन पर्यन्त चलती रहती है। परिपक्वता, थकान, बीमारी आदि के व्यवहार में परिवर्तन का अधिगम में कोई संबंध नहीं लेता।

अधिगम की विशेषताएँ –

1. अधिगम प्रक्रिया है – व्यक्ति अपने एवं दूसरे के अनुभव सीखकर अपने व्यवहार, इच्छाओं, भावनाओं आदि में परिवर्तन करता है।

2. अधिगम सार्वभौमिक प्रक्रिया है – सीखना किसी व्यक्ति, विशेष जाति, प्रजाति तथा देश-विदेश की बपौती नहीं है। संसार के जितने भी जीव-धारी हैं अपने-अपने तरीके एवं अनुभव के माध्यम से कुछ-न-कुछ सीखते हैं। मानव के सीखने की कोई निश्चित स्थान, समय नहीं होता है। वह हर घड़ी, हर जगह, कहीं भी, कुछ न कुछ सीखता रहता है।

3. अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली एक सतत प्रक्रिया है – यह प्रक्रिया सदैव तथा सर्वत्र चलती रहती है। सीखने की प्रक्रिया में विराम और अस्थिरता की अवस्था कभी नहीं आती है।

4. अधिगम उद्देश्य लक्ष्य निर्देशित होता है – सीखना, उद्देश्य पूर्ण होता है। उद्देश्य जितना ही अधिक होता

होता है, सीखने की प्रक्रिया उतनी ही तीव्र होती है। उद्देश्य के अभाव में सीखना असफल होता है। अतः सीखने की प्रक्रिया इसी उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ती है।

5. अधिगम वातावरण एवं क्रियाशीलता की उपज है-

सीखना रिक्तता में न होकर सदैव उस वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में होता है, जिसमें व्यक्ति रहता है। बालक का संबंध जैसे वातावरण से होता है, वैसे ही वह बातें सीखता है। यही कारण है कि आजकल इस बात पर बल दिया जाता है कि विद्यालय इतना उपयुक्त और प्रभावशाली वातावरण, अधिक अच्छी बातों पर सीख सके।

6. अधिगम खोज करना है-

वास्तविक सीखना किसी बात की खोज करना है इस प्रकार सीखने में व्यक्ति विभिन्न प्रकार के प्रयास करके स्वयं एक परिणाम पर पहुँचता है। मार्शल के अनुसार, "सीखना उस बात को खोजने और जानने का कार्य है, जिससे एक व्यक्ति खोजता और सीखता है।"

7. अधिगम अनुभवों का संगठन है-

अधिगम न तो नये अनुभव की प्राप्ति है और न पुराने अनुभवों का योग। वरन् नये एवं पुराने अनुभव द्वारा नयी बातें सीखता जाता है।

थार्नडाइक के अधिगम के नियम व सिद्धांत

अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली क्रिया है। व्यवहार में कोई भी अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन अधिगम है। यह पहले सीखी गयी क्रिया या अनुभव का सिद्धांत है।

थार्नडाइक के सीखने के नियम

E.L. थार्नडाइक ने 1913 में प्रकाशित होने वाली अपनी पुस्तक शिक्षा मनो-विज्ञान में अधिगम की नवीन सिद्धांत प्रति-पादित किया। E.L. थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित सीखने के सिद्धान्त को एक अति-महत्वपूर्ण सिद्धांत माना गया है। जिसमें सहचर्यवाद तथा विज्ञान की विधियों का अनोखा संगम दिखायी देता है। थार्नडाइक ने सीखने के सिद्धान्त का प्रतिपादन 1869 ई० में अपने PhD शोध प्रबन्ध जिसका शीर्षक — एनिमल इन्टेलिजेंस था, वे पशु व्यवहारों के अध्ययन के फलस्वरूप किया। पशुओं के सीखने पर विभिन्न प्रकार के अध्ययन व प्रयोग किये और इन्ही प्रयोगों के आधार पर अधिगम के विभिन्न नियम और सिद्धांत प्रति पादित किये हैं। थार्नडाइक ने सीखने के नियम को दो भागों में वर्गीकरण किया —

1. मुख्य नियम —

1) तत्परता का नियम
2) अभ्यास का नियम
   a) उपयोग का नियम
   b) अनुप्रयोग का नियम
3) प्रभाव / परिणाम का नियम

2. गौण नियम

1. बहुप्रतिक्रिया का नियम
2. अभिवृत्ति या मनोवृत्ति का नियम
3. आंशिक क्रिया का नियम
4. आत्मीकरण का नियम
5. संबंधित परिवर्तन का नियम

मुख्य नियम -

1. तत्परता का नियम -

इस नियम का अभिप्राय है यदि हम किसी कार्य को सीखने के लिए तैयार या तत्पर होते हैं तो उसे शीघ्र ही सीख लेते हैं। तत्परता में कार्य करने की इच्छा निहित रहती है। यदि बालक में गणित के प्रश्न हल करने की इच्छा है तो वह उनको करता है अन्यथा नहीं। इतना ही नहीं तत्परता के कारण वह उनको अधिक शीघ्रता और कुशलता से करता है। तत्परता उसके ध्यान को कार्य पर केन्द्रित करने में सहायता देती है। जिसके फलस्वरूप वह उसे सफल करने में सहायक होता है। भाटिया का कथन है- तत्परता या किसी कार्य के लिए तैयार होना, युद्ध को आधा विजय कर लेना। तत्परता के नियम के अनुसार, शिक्षक सीखने की परिस्थितियों से बालक एकाकार हो जाता है।

2. अभ्यास का नियम — अभ्यास का नियम किसी क्रिया को बार-बार दोहराने से दृढ़ हो जाता है। रहीम ने कहा है-

"करत - करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान,
रसरि आवत जात ते, सिल पर परत निसान ॥"
अर्थात् अभ्यास करते रहने से मूर्ख भी विद्वान हो जाता है; ठीक वैसे ही जैसे, कुएं की जगत पर बार-बार रस्सी के आने जाने से निशान पड़ जाते हैं। अभ्यास नियम के दो प्रकार हैं -

1) उपयोग नियम -
इस नियम का तात्पर्य है - 'अभ्यास कुशल बनाता है।" यदि हम किसी कार्य का अभ्यास करते रहते हैं तो हम उसे सरलता पूर्वक करना सीख जाते हैं और उसमें कुशल हो जाते हैं। हम बिना अभ्यास किए साइकिल चलाने में गिटार बजाने में या सितार बजाने में सफल नहीं हो सकते।

b अनुपयोग नियम -
इस नियम का अर्थ है कि यदि हम सीखे हुए कार्य का अभ्यास नहीं करते हैं तो उसे भूल जाते हैं। अभ्यास के माध्यम से ही हम उसे स्मरण रख सकते हैं। उदा० हम किसी गिटार व सितार बजाने का अभ्यास छोड़ देते हैं तो हमारा संपर्क उससे अलग हो जाता है और हम भूल जाते हैं। "कोलसनिक एवं हर्लैण्ड" का कथन है - जो कार्य बहुत समय तक दोहराया नहीं जाता है, इसी को अनुपयोग का नियम कहते हैं।

3. प्रभाव / परिणाम का नियम -
इस नियम के अनुसार जिस कार्य को हम सीखना चाहते हैं

जिसका परिणाम हमारे लिए लाभप्रद होता है या जिससे हमें सुख या सन्तोष मिलता है। यदि हमको किसी कार्य को करने में कष्ट होता है तो हम उसे करना नहीं चाहते या सीखना नहीं चाहते। प्रभाव के नियम को सन्तोष व असंतोष का नियम भी कहा जाता है। विद्यालयों में पुरस्कार तथा दण्ड अपनाकर सीखने की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जाता है।

गौण नियम –

1 अभिवृत्ति एवं मनोवृत्ति का नियम –

इस नियम का तात्पर्य यह है कि जिस कार्य के प्रति व्यक्ति की अभिवृत्ति या मनोवृत्ति होती है उसी अनुपात में वह उसको सीखता है अर्थात् यदि व्यक्ति मानसिक रूप से सीखने के लिए तैयार है तो नवीन क्रियाओं को आसानी से सीख लेता है और यदि व्यक्ति मानसिक रूप से किसी कार्य को करने के लिए तैयार नहीं है तो या तो हम उसे करने में असफल होते हैं या अनेक त्रुटियां करते हैं या बहुत विलंब से करते हैं। यही कारण है कि शिक्षक प्रेरणा देकर बालकों को नवीन ज्ञान को ग्रहण करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करते हैं।

आंशिक क्रिया का नियम –

इस नियम के अनुसार व्यक्ति जिस कार्य को करना चाहता

है उसे छोटे- छोटे खण्डो में विभाजित कर लेते हैं। इस प्रकार का विभाजन सीखने के कार्य को सरल और सुविधा जनक बना देता है। अतः व्यक्ति उन छोटे- छोटे खण्डों या भागों को शीघ्रता और सुगमता से करके संपूर्ण कार्य को पूरा करते हैं। इस नियम पर अंश से पूर्ण की ओर का शिक्षण का सिद्धान्त आधारित किया जाता है। शिक्षक भी अपनी संपूर्ण सामग्री या पाठ योजना को छोटी - छोटी इकाईयों में या खण्डों में विभाजन करके छात्रों को पढ़ाता है और इस प्रकार आंशिक क्रियाओं द्वारा समस्याओं को हल किया जाता है।

3 आत्मीकरण का नियम - यह नियम का अभिप्राय है कि हम जो भी ज्ञान प्राप्त करते हैं उसका आत्मीकरण कर लेते हैं या उसे आत्मसात कर लेते हैं। हम नवीन को अपने पूर्व ज्ञान का अंग बना लेते हैं। यही कारण है कि जब बालक शिक्षक को कोई नयी बात सिखाता है तब उसका पहले सीखी हुई बात से संबंध स्थापित कर लेता है।

4 समानता का नियम - इस नियम के अनुसार अधिगमनकर्ता किसी नई परिस्थिति समस्या में वैसे ही अनुक्रिया करता है जैसी अनुक्रिया पूर्व में सीखी गयी थी क्योंकि व्यक्ति को उस समय उससे मिलती - जुलती परिस्थिति याद आ जाती है। इस प्रकार समान तत्वों के आधार पर नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान से संबंध करके पढ़ाने से सीखना सरल हो जाता है

5. साहचर्य परिवर्तन का नियम — इस नियम के अनुसार सीखने की अनुक्रिया का स्थान परिवर्तन होता है। यह स्थान परिवर्तन मूल उद्दीपन से जुड़ी हुई अथवा उसकी किसी सहयोगी उद्दीपक वस्तु के प्रति किया जाता है। उदा० भोजन को देखकर कुत्ते के मुँह से लार टपकने लगती है परन्तु कुछ समय बाद खाने के प्याले को देखकर ही लार टपकने लगती है।

थार्नडाइक के सिद्धांत का शिक्षा में महत्व —

1. यह सिद्धान्त सीखने पर अधिक बल देता है।

2. यह सिद्धांत अधिगम प्रक्रिया में समस्या समाधान पर विशेष बल देता है।

यह सिद्धांत कक्षा शिक्षण में अभिप्रेरणा को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है।

यह सिद्धांत मंद बुद्धि बालकों को शिक्षण अधिगम के अवसर देता है।

यह सिद्धांत अभ्यास क्रिया पर आधारित है। जिससे सीखा गया कार्य स्थायी होता है।

Principal
Maa Reweti College of Educatio
Mandla (M.P.)

Run by: *Maa Rewati Educational and Welfare Society*

MAA REWATI COLLEGE OF EDUCATION

(Recognised by: N.C.T.E. & Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur)
Jantipur Road, Badi Khairi, Mandla (M.P.)-481661
Phone: 0764-2291912, Website: www.mrcedu.com
Email: mrcedu1@gmail.com

B.A.B.Ed Assignment Record

Date: / /
Page No.

Q1. राजा निरबंसिया कहानी की प्रमुख विशेषता बताइये।

-> राजा निरबंसिया कहानी और कमलेश्वर का परिचय ->

कमलेश्वर नयी कहानी आंदोलन के संस्थापकों में रहे, जिसे नयी कहानी त्रयी कहा जाता है। कमलेश्वर के अलावा राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश इस त्रयी में आते हैं। कमलेश्वर ने तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। जिसमें से अधिकतर 'समग्र कहानियाँ' में संगठित है। प्रारम्भिक दौर की कहानी संग्रहों में 'राजा निरबंसिया (1957 ई.)' और 'कस्बे का आदमी (1957 ई.)' और आते हैं। जिसमें कस्बाई जीवन से संबंधित कहानियाँ संगठित हैं। प्रारम्भिक दौर उनकी कुछ प्रसिद्ध कहानियाँ निम्नलिखित हैं। राजा निरबंसिया, मासूम का दारिया, नीली झील, तलाश, बयान, जिंदा मुर्दे, जॉर्ज पंचम की नाक, मुर्दों की दुनिया, कस्बे का आदमी आदि।

कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में परंपरा से विद्रोह और अनुभव-क्षेत्र की प्रमाणिकता पहचान पर जोर दिया है। वे जीवन-संघर्ष के जिन अनुभवों से होकर गुजरे थे, उन्हीं स्थितियों पर कहानी लिखी है। यही वजह है कि उनकी कहानियों में पात्र नहीं स्थिति प्रधान है। उन्होंने लिखा भी है, मैंने कभी भी अपनी रचना को किसी व्यक्ति पर आधारित नहीं किया

राजा निरबंसिया कहानी के प्रमुख पात्र

जगपती - चन्दा का पति

चन्दा - जगपती की पत्नि

दयाराम - जगपती का रिश्तेदार (दूर रिश्ते का भाई)

बचनसिंह - कस्बे के अस्पताल का कम्पाउंडर

भटियारिन - राजा निरबंसिया की रानी ही भटियारिन बनकर राजा निरबंसिया से मिलने जाती है।

राजा निरबंसिया कहानी का सारांश

राजा निरबसिया कहानी कस्बाई जीवन पर आधारित है, जो आम आदमी की ही कथा कहती है। कमलेश्वर ने दो भिन्न युगों की कहानियों को निरबसिया कहानी आर्थिक

कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में परम्परा से विद्रोह और अनुभव-क्षेत्र की प्रमाणिकता पहचान पर जोर दिया है। वे जीवन-संघर्ष के जिन अनुभवों से होकर गुजरते है।

राजा निरबंसिया कहानी का सारांश

राजा निरबसिया कहानी कस्बाई जीवन पर आधारित है, जो आम आदमी की ही कथा कहती है। कमलेश्वर ने दो भिन्न युगों की कहानियों को निरबंसिया कहानी आर्थिक विवशताओं, निरूपताओं द्वारा दांपत्य संबंधों को समांतर रूप से इस कहानी में रख दिया है।

एक ही समय में पुराने तथा आधुनिक युग की दो कहानियाँ साथ चलती है। प्रथम कहानी लोक कहानी है, लेकिन यह कहानी कभी भी नहीं लगता कि दूसरी कहानी के ऊपर थोपित हो रही है। बल्कि सहायक कहानी के रूप में आती है संपूर्ण कहानी आधुनिक नायक जगपती और चंदा की व्यथा का ही वर्णन करती है।

" राजा निरबंसिया " कहानी आर्थिक विवशताओं निरूपताओं द्वारा दांपत्य संबंधों की मधुरिमा के कड़वाहट में बदलने, इन संबंधों के तिड़कने और टूटने की वेदी तथा संतानहीन दंपति

की सामाजिक स्थिति और मानसिक पीड़ा इस पीड़ासन के निमित्त पुत्र प्राप्ति की ललक, आदि का मार्मिक चित्रण करती है।

विशेषताएँ ->

1) राजा निरबंसिया में कमलेश्वर ने शिल्प के माध्यम से दो युगो के बदलाव को दिखाया है। एक लोककथा जो अवचेतन मन है।

दूसरी 'जगपती की आधुनिक कथा के माध्यम से नये सन्दर्भो को व्यक्त किया है। दोनो कथाएँ परस्पर विरोधी है,

परंतु इन विरोधी कहानियाँ से ही दोनो युगो के अंतर का पता चलता है। जब वर्तमान की कथा के जगपती और चंदा का हृदे मन का पानात, और व्यथा का बोझ लेखक सीधे-सीधे नहीं कह पाता है।

13. उपन्यास सूखा बरगद में मुस्लिम समाज की किन विडम्बनाओं का चित्रण किया गया है।

→ सूखा बरगद । - सूखा बरगद मे मुस्लिम समाज में व्याप्त आशंका, अन्धविश्वास, सामाजिक रूढियों और विडम्बनाओं का अद्भुत चित्रण है।

- घृणित राजनीतिक सोच → मुसलमानो के डर को बढ़ाने में रियायत को अपना रियायत को अपना हथियार बनाने वाले मुसलमान नेताओ का योगदान कम नही है। उपन्यासकार ने रज्जब अली के माध्यम से उन स्वार्थी नेताओं की वास्तविकता का बयान दिया रज्जब अली का एक दल बनाता है। हिन्दुस्तान ट्रेडिंग के नाम से जो मुल्क के वफादार मुसलमानो के हित के लिए लड़ने का संकल्प लेता है। यही रज्जब अली का एक दिन जनसंघ मे शामिल हो जाता है। उसके सुहैल जैसे प्रशंसक स्तब्ध रह जाते है। लेकिन यह घटना उन्हे उन्हे और कट्टर तथा साम्प्रदायिक बना देती है। वे इस मुल्क के प्रति बहुत कटु शासन-व्यवस्था आलोचक और केवल मुसलमानो तक सीमित सोच को होने वाले अतिवादी व्यक्ति के रूप मे दिखायी देते है। सत्ता और धार्मिक वर्चस्व के लालच दोनों मिलकर इंसान से उसकी इंसानियत छीन लेने की कोशिश

वरना यह क्यों होता है कि राष्ट्रीय योजनाओं सार्वजनिक स्थलों और सरकारी संस्थानों में किसी धर्म विशेष को धार्मिक विधि-विधानों को ही महत्व दिए जाने से उस धर्म के मानने वाले के अहं को संतुष्टि मिल जाती है।

इसका विचार ही नहीं किया जाता है कि धर्मनिरपेक्ष में किसी एक धर्म को विशिष्टता नहीं दी जाए बल्कि सर्वधर्मसमभाव के निर्माण हेतु एक ऐसी पद्धति का निर्माण किया जाए, जिससे कोई अपेक्षित न महसूस कर सके।

उपन्यासकार ने संकेतों में व्यंजित किया है कि गंगा-जमुनी संस्कृति की चर्चा के बावजूद यह हकीकत है कि हिंदू-मुसलमानों एक दूसरे की संस्कृति और मिथकों के बारे में बहुत कम जानते हैं। यह शायद पहले हुकूमत करने के दंभ की वजह से हुआ या आज बहुसंख्यकों के सामने असुरक्षा लेकिन यह धारणा उन्हें और कट्टर तथा साम्प्रदायिक बना देती है। वे इस मुल्क के प्रति बहुत कटु शासन-व्यवस्था के अत्याचार और केवल मुसलमानों तक सीमित सोच को होने वाले अतिवादी आवेग के रूप में दिखायी देते हैं। सत्ता और धार्मिक वर्चस्व की ललक दोनों मिलकर इंसान से उसकी इंसानियत छीन लेने की कोशिश में है। वरना यह क्यों होता है कि राष्ट्रीय आयोजनों, सार्वजनिक स्थलों और सरकारी संस्थानों में किसी धर्म विशेष की धार्मिक विधि-विधान को ही महत्व दिए जाने से उस धर्म के मानने वाले के अहं को संतुष्टि मिल जाती है।

इसका विचार व ही नहीं किया जा सकता।

'सूखा बरगद' मंजूर एहतेशाम का ऐसा उपन्यास है जिसने उपन्यास-जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए एक हलचल पैदा की। क्योंकि यह उपन्यास महज उपन्यास ही नहीं भारतीय मुस्लिम समाज की मुकम्मिल तस्वीर भी है।

वर्तमान मुस्लिम समाज के अन्तर्विरोधों की गंभीर पड़ताल की वजह से ही यह उपन्यास काल-सीमा को लाँघता प्रतीत हुआ और उपन्यासकार मंजूर एहतेशाम का नाम राही मासूम रजा और राही सरीखे चर्चित लेखकों की श्रेणी में शुमार किया जाने लगा। सूखा बरगद में मुस्लिम समाज में व्याप्त अशिक्षा, अंधविश्वास, सामाजिक रूढ़ियों और विडम्बनाओं का अंकित किया है।

मंजूर एहतेशाम ने सूखा बरगद में मुस्लिम समाज के विकास से जुड़े जिन संवेदनशील गतिरोध को स्पर्श किया है उनकी चर्चा से भी आमतौर पर लोग घबराते हैं। धर्म, जातीयता, क्षेत्रीयता, भाषा और साम्प्रदायिकता के जो सवाल, आजादी के बाद इस मुल्क में पैदा हुए हैं, उनकी असहनीय आँच इस सम्पूर्ण कथाकृति में महसूस की जा सकती है।

इस उपन्यास में ये सवाल सूखा बरगद की सूखती हुई जड़ों की मानिन्द फैले हुए हैं, जिसके नीचे और जातीयता, न तो कोई कौम पनप सकता है और न खुशहाली की कल्पना ही सकती है। इन सवालों का जवाब समाज में शोषित, पीड़ित, अपमानित और वंचित लोग ही जो आज भी अपना वजूद बनाए हुए हैं। यह उपन्यास सामाजिक विकास के अन्तर्गत संवेदनशील गतिरोध को सिर्फ छूता ही नहीं अस्तित्व और उम्मीद के संदर्भ में छानबीन भी करता है।

Principal
Maa Reweti College of Education
Mandla (M.P.)

Run by: *Maa Rewati Educational and Welfare Society*

MAA REWATI COLLEGE OF EDUCATION

(Recognised by:N.C.T.E. & Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur)
Jantipur Road, Badi Khairi, Mandla (M.P.)-481661
Phone: 0764-2291912,Website: www.mrcedu.com
Email: mrcedu1@gmail.com

Action Plan indicating the way students are familiarized with the diversities in India school systems

B.Ed Lesson Plan Proforma

पाठयोजना - 01

दिनाँक - 11/10/21 कक्षा - 9 वीं
विषय - सामाजिक अध्ययन [इतिहास] कालखण्ड - "ब"
विद्यालय - ॐ मॉडल स्कूल कटरा (मण्डला) समयावधि - 45 मिनट

प्रकरण :→ भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना

सामान्य उद्देश्य :→ (i) बच्चों में मानसिक शक्तियों का विकास करना
(ii) बच्चों को मानव समाज के विकास से अवगत कराना,
(iii) बच्चों में वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण विकसित करना,
(iv) बच्चों में इतिहास के प्रति रुचि जाग्रत कराना,
(v) बच्चों की बौद्धिक क्षमता का विकास करना,

विशिष्ट उद्देश्य :→ छात्रों को भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थाप[ना] के बारे में अध्ययन कराना,

शिक्षण सहायक सामग्री :→ चार्ट, पोस्टर, चित्र आदि,

आवश्यक सामग्री :→ श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर आदि,

पूर्वज्ञान :→ छात्रों को भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना की सामान्य जानकारी है,

प्रस्तावना प्रश्न :→

छात्राध्यापिका क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ
(1) तुम्हारे देश का क्या नाम है?	उ० = भारत

Principal
Maa Rewati College of Education
Mandla (M.P.)

छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया
② भारत पर मुगलों के बाद किसका शासन हुआ?	उ० अंग्रेजों का,
③ अंग्रेज सर्वप्रथम भारत में किस उद्देश्य से आए थे?	उ० व्यापार करने के लिए,
④ व्यापार के बाद उनका क्या उद्देश्य हो गया?	उ० समस्यात्मक प्रश्न,

उद्देश्य कथन :→ छात्रों आज हम "भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के बारे में" अध्ययन करेंगे,

शिक्षण विधि :→ प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्यान विधि, श्यामपट्ट विधि आदि,

प्रस्तुतीकरण :→

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
1 भारत को उप-निवेश राज्य बनाने का कारण	जब एक देश दूसरे देश पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लेता है, तो दूसरा देश पहले देश का उपनिवेश राज्य बन जाता है, अंग्रेजों ने भारत को उपनिवेश राज्य इसलिए बनाया क्योंकि, वह भारत को कच्चे माल की पूर्ति	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे,	जब मुख्य देश उन्नति करता है तब उपनिवेश की अवनति होती है,

Date :

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
1] भारत के उप-निवेश राज्य बनाने का कारण-	का साधन बनाना चाहते थे, और अपने देश का सस्ता कपड़ा भारत में ऊँचे दाम पर बेचते थे, उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए चलाए गए विशेष अभियान को औद्योगिक क्रान्ति कहते है	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें।	उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए चलाए गए विशेष अभियान को औद्योगिक क्रान्ति कहते है।
2] भारत के राज्य और विदेशी कंपनियों की सेवा	भारतीय राजा और नवाब अपना राज्य बढ़ाने के लिए अपने पड़ोसी राजा के ऊपर हमला करते थे, इसलिए उनमें आपसी फूट व्याप्त थी, इसका फायदा विदेशी शक्तियाँ उठाने लगी थी, वे शर्तों पर किसी एक भारतीय राजा की मदद करते थे, और युद्ध के लिए अपने सैनिकों को भेजते थे। उनके सैनिक अनुशासित थे और उनके पास आधुनिक साथ हथियार भी थे।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें। छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें।	वे शर्तों पर किसी एक भारतीय राजा की मदद करते थे उनके सैनिक अनुशासित थे, और उनके पास आधुनिक हथियार भी थे।

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
3) राजाओं और नवाबों को अंग्रेजों से खतरा	कम्पनी को भेंट देने और उसकी सेना का खर्चा उठाने में भारतीय राजाओं पर बहुत बोझ पड़ने लगा था, और भारतीय राजा यह नहीं चाहते थे कि उनके राज्य में किसी दूसरे देश के लोग सेवाएँ रखें,	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें।	भारतीय राजा यह नहीं चाहते थे कि उनके राज्य में किसी दूसरे देश के लोग सेवाएँ रखें,
	युद्ध लड़े, किले बनाएँ और अपनी सैनिक शक्ति की धाक जमाएँ,	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें।	
	कम्पनी कारीगरों से जोर जबरदस्ती से बहुत कम कीमतों पर माल खरीदने की कोशिश करती थी, राजाओं के विरोध करने पर वह उस राजा को हटाकर दूसरे राजा को राजा बना देते थे, जो उनके व्यापार के तरीकों पर रोक नहीं लगाते थे,	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें।	राजाओं से भेंट में मिले इलाके में कम्पनी किसानों से हद से ज्यादा लगान वसूलती थी,
	इस प्रकार से वे राजाओं से भेंट में मिले इलाके में कम्पनी किसानों से हद से ज्यादा लगान वसूलती थी		

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
5) भारत को अंग्रेजों ने अपना उपनिवेश राज्य क्यों बनाया-	इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के दौरान कारखाने लग गए थे, अतः वह भारत को सिर्फ कच्चे माल की पूर्ति का साधन बनाने चाहते थे, वे भारत में कई जरूरी फसलें बोवा कर उन्हें दूर-दूर बेचते थे	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे,	जैसे- नील, पटसन अफीम, गन्ना चाय, कहवा,
	उन्होंने व्यापार की यह सब चीजें लाने वाले जाने के लिए भारत के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में रेल लाइनें सड़के बिछाना भी शुरू किया, यह सब करने के लिए उन्हें भारत में जगह-जगह अपने अधिकारी रखने और भारत के लोगों पर अपना नियंत्रण बनाने की जरूरत महसूस हुई,	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे,	
	ईस्ट इंडिया कंपनी नील, कॉफी, चाय के बागान भारत में लगाती थी, और इन फसलों को सस्ते दामों में खरीद कर अपने जहाजों से इंग्लैंड के कारखानों में भेजती थी,	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे,	ईस्ट इंडिया कंपनी नील, कॉफी, चाय के बागान भारत में लगाती थी,

बोधात्मक प्रश्न :-

छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया
① उपनिवेश राज्य किसे कहते है?	उ० जब एक देश दूसरे देश पर अपना वर्चस्व स्थापित करता है तो दूसरे देश पहले देश का उपनिवेश राज्य होता है
② औद्योगिक क्रान्ति किसे कहते है?	उ० उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए चलाए गए विशेष अभियान को कहते है,
③ भारतीय राजा अपना राज्य बढ़ाने के लिए क्या करते थे,	उ० पड़ोसी राजा के ऊपर हमला करते थे,
④ यूरोपिय सेना भारतीय सेना से बेहतर क्यों थी?	उ० वे नियमित अभ्यास करते व उनके पास अत्याधुनिक हथियार थे,
⑤ भेंट में प्राप्त इलाकों में कम्पनी क्या करती थी,	उ० कम्पनी किसानों से हद से ज्यादा लगान वसूलती थी,

पुनरावलोकन प्रश्न :->

Q.① कम्पनी कच्चा माल कहाँ से खरीदती थी?

Q.② विदेशी सैनिक भारतीय सैनिकों से शक्तिशाली क्यों थे?

Date :

Q.③ कम्पनी का कारीगरों के प्रति कैसा व्यवहार था?
Q.④ अंग्रेजों ने भारत को उपनिवेश राज्य क्यों बनाया गया?
Q.⑤ बढ़ावा देने के लिए विशेष अभियान चलाया गया उस अभियान क्या नाम से जाना जाता है?

कक्षा कार्य :→

प्र० ① रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

① विदेशी सैनिक भारतीय सैनिक से .... थे,
② विदेशी सैनिकों के पास .... हथियार थे,
③ राजाओं से भेंट मिले इलाके में कम्पनी किसानों से .... वसूलती थी,

प्र० ② सत्य / असत्य बताइए -

① औद्योगिक क्रान्ति उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए विशेष अभियान चलाया गया था, ( )

② जब मुख्य देश उन्नति करता है तब उपनिवेश देश उन्नति करता है, ( )

③ अंग्रेज भारत कच्चे माल की पूर्ति का साधन बनाना चाहते थे, ( )

प्र० ③ सही विकल्प बताइए -

① ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने किसके बागान भारत में नहीं लगाया?

(अ) शरबत (ब) नील
(स) चाय (द) कॉफी

गृहकार्य :->

(i) ईस्ट इण्डिया कम्पनी का भारत में व्यापार करने के तरीकों पर प्रकाश डालिए,

(ii) अंग्रेजों ने भारत की सहायता करके किस प्रकार भारतीय राजाओं को गुलाम बनाया,

पर्यवेक्षक के हस्ता॰ | विषय शिक्षक के हस्ता॰ | Komal छात्राध्यापिका के हस्ता॰

टिप्पणी:-> कक्षा कार्य के दौरान कार्य उत्तम रहा।

प्रधानाचार्य
उ॰ मॉडल स्कूल कटरा
मण्डला (म.प्र.)

Principal
Maa Reweti College of Education
Mandla (M.P.)

Run by: *Maa Rewati Educational and Welfare Society*

MAA REWATI COLLEGE OF EDUCATION

(Recognised by:N.C.T.E. & Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur)
Jantipur Road, Badi Khairi, Mandla (M.P.)-481661
Phone: 0764-2291912,Website: www.mrcedu.com
Email: mrcedu1@gmail.com

B.A.B.Ed. Lesson Plan Proforma

LESSON PLAN -1

Page No. :
Date :

Name of School - Bright Career High school
Date - 15/12/2022
Subject - English
Class - 6th
period - IInd
Time - 45 minit

Topic - The Tree

General Objectives -

(i) To make the students to understant english language
(ii) To enable student to read and write Correct English.
(iii) To imprure the Vocabulary of students.
(iv) To develop interest of Students in English language.
(v) To enalable the students to learn how to pronunce word correctly.

Specific Objectives -

To make student undestand the Story The Tree and made them Read, learn and write abiut the story.

Teaching Aid -

Chalk, Duster, Blackboard, textbook.

Previous knowledge -
It is assumed by the teacher that student do know about the tree but not about the story The tree and to know this teacher ask student few question.

S. NO.	pupil teacher Activity	pupil Activity
Q1.	Do you all have seen Tree.	Ans. - Yes
Q 2.	Where do you have seen trees.	Ans. - Forest, From Near house. Village.
Q.3	Do you all know some thing about this story The tree	No Response with smile and shy face

Announcement of Lesson -

After getting no response from the student side in final question. teacher announce the lesson. " Student today we will student study the story about The Thee.

Teaching method -
By using Explanation of Textbook and Black board teachers relate the teaching betters.

Presentation -

Teaching Duty	pupil teacher Activity	Student Activity	Blackboard
Model Reading	The teacher will make student stand and read the story paragraph and give the chance to all students for reading and after each paragraph teacher will explain students bilingual way and after finishing the reading of children now teacher will read it one more time and explain it finally in bilingual method.	Other student will follow the paragraph reading by student carefully	The Tree
Pronunciation Skill	The pupil teachers will write the difficult words of the lesson on the black board and pronunce them one by one.	Student will pronunce the words loudly	
Imitation Reading	The pupil teachers will ask few student to read the lesson.	The student will read one by one	

Page No.
Date :

Explanation	The pupil teachers will explain the whole lesson and meaning of difficult words.	Students will listen. Attentively	
Silent Reading	Pupil teachers will make student to read the lesson silently to develop reading.	The student will read the lesson silently.	
Difficult word Meaning	Shade - छाया often - बरगद के पेड़ Banyan tree - अक्सर Stays - रिहाइश grew - बढी wabe - उठा Gradully - धीरे धीरे Spread - फैला हुआ Swing - झूला Wides - व्यापक		

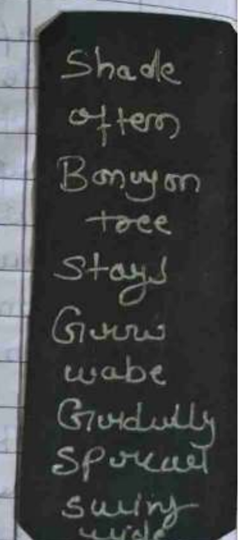

Comprehensive Question -

S.NO.	Question	Answer
Q.1.	What is the lesson about?	Tree
Q.2	What do this village children do when they get tired?	Sleep under its shades

Q.3.	Why do the passage les sit under the tree?	They take Rist.
Q.4	Who take rest at night im the tree?	Birds small animals of Insects.
Q.5	Where do we get fresh air from?	From the tree.
Q.6.	What should we do for the three?	love and care the tree.

Recapitulation -

1. What is the lesson about?
2. what is tree uses?
3. where do we get fresh air from?
4. what should we do for the tree?

Class work -

1. Match column 'A' with column 'B'.

A	B.
The story is about	Take rest and sleep in it
The children	sit under it to take rest
The people	and the seed woke up from
The rain falls	a fifty year old banyan tre
The birds.	Swing on it branches.

Home Work

1. Write a story in your own words what you came to know about this story.

2. Study whole lesson in home one more time.

06/2/23 — Sign of Supervisor

06/01/23 — Sign of Subject Teacher

Sign of pupil Teacher

Principal
Maa Reweti College of Education
Mandla (M.P.)